PART-**1**

अरब भूगोलवेत्ता- अल-मसूदी

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

अरब भूगोलवेत्ता (Arab Geographers in hindi)

अनेक अरब लेखकों और विद्वानों ने भूगोल के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनमें से कुछ प्रमुख विद्वानों के योगदान की संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

(2) अल-मसूदी (Al-Masudi)

अल-मसूदी का जन्म दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध (985 ई०) में बगदाद में हुआ था। अल-मसूदी एक भूगोलवेत्ता ही नहीं बाल्कि इतिहासकार और प्रसिद्ध लेखक भी थे उन्होंने एशिया और अफ्रीका के अनेक दूरस्थ भागों की यात्राएं किया था। उन्होंने यूनानी और रोमन विद्वानों की रचनाओं का गहन अध्ययन किया था और यात्राओं द्वारा पर्याप्त भौगोलिक सूचनाओं को संग्रहीत किया था। अल-मसूदी ने कई पुस्तकें लिखा था जिनमें से केवल एक ही पुस्तक उपलब्ध है जिसका नाम है-'किताब-मुराज-अल-दहाब'।

अल-ममूदी ने पूथ्वी की गोलाभ आकृति की पुष्टि की थी। उन्होंने अरब सागर को बृहत्तम सागर बताया था और साथ ही अरब से चीन तक के जलीय मार्ग में सात सागरों का वर्णन किया था। उन्होंने भौतिक भूगोल में महत्वपूर्ण कार्य किया था। उनके अनुसार नदियां अपना मार्ग परिवर्तन करती रहती हैं। और अनेक प्रकार की स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं। उनके अनुसार 'पृथ्वी का कोई ऐसा स्थान नहीं है जो हमेशा जलाच्छादित रहा हो और ऐसा भी नहीं है कि कोई भूमि हमेशा स्थल ही रही हो । हमेशा परिवर्तन होता रहता है। उन्होंने बंगाल की खाड़ी (हेरकेन्द सागर) की मानसूनी हवाओं का वर्णन एक मौसम विज्ञानी की दृष्टि से किया है। अल-मसूदी ने मनुष्य और पर्यावरण के पारस्परिक संबंध स्थापित करने का भी उल्लेखनीय प्रयास किया था।

अल-मसूदी का योगदान प्रादेशिक भूगोल में भी था। उन्होंने सीरिया (अलशाम), फारस, मध्य एशिया, मेसोपोटामिया तथा अन्य यात्रा विये गये देशों की प्रादेशिक विशेषताओं का वास्तविक वर्णन किया है। उन्होंने विश्व को 14 जलवायु प्रदेशों में विभक्त किया था।